रजि. नं. पी.बी./जे.एल–/0011/2012-14 RNI No. 26281/74

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–73, अंक : 46, 9-12 फरवरी 2017 तदनुसार 1 फाल्गुन सम्वत् 2073 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

ऋषि बनाने वाला

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

इमामग्ने शरणिं मीमृषो न इममध्वानं यमगाम दूरात्।
आपिः पिता प्रमतिः सोम्यानां भूमिरस्यृषिकृन्मर्त्यनाम्।।

–ऋ० १।३१।१६

शब्दार्थ–हे **अग्ने** = ज्ञानदातः ! **नः** = हमारी **इमाम्** = इस **शरणिम्** = त्रुटि को **मीमृषः** = सहन ही कर जा, **यम्** + **इमम्** = जिस इस **अध्वानम्** = मार्ग को हम **दूरात्** = दूर से, कठिनता से **अगाम** = प्राप्त हुए हैं। तू **आपिः** = प्राप्त करने योग्य बन्धु **पिता** = पिता **सोम्यानाम्** = शान्ति के अभिलाषियों का **प्रमतिः** = चिताने वाला, सार-सँभाल करने वाला तथा **भूमिः** = संसार-चक्र को चलाने वाला और **मर्त्यानाम्**= मरणधर्माओं को **ऋषिकृत्** = ऋषि बनाने वाला **असि** = है।

व्याख्या–अल्पज्ञता के कारण प्रकृति के मोहक जाल में फँसकर जीव परमात्मा से दूर चला जाता है। जिस लालसा से जाल में फँसा था, वह पूरी न हुई, प्रकृति का मोहक जाल इन्द्रजाल, मृगमरीचिका ही प्रमाणित हुआ। अपने बन्धु को भूल चुका था। सुकृत जागे, ज्ञानी गुरु से मेल हुआ, उसने बताया, अरे ! तुम बहुत दूर जा पड़े। **तद् दूरे** [यजुः० ४०।५] वह बहुत दूर है। घबराया, किन्तु शान्त, दान्त, उपरत, तितिक्ष और समाहित हुआ, चल पड़ा। गिरता-पड़ता भगवान् के द्वार पर पहुँचा और कहने लगा– **'इमामग्ने शरणिं मीमृषो नः'** = हे गुरो ! हमारी इस भूल को सहन करो। क्यों ? **'इममध्वानं यमगाम दूरात्'** = इस रास्ते पर हम दूर से आये हैं।

दूर के मार्ग से आने में अनेक कष्टों एवं भूलों का होना स्वाभाविक है। हमसे भी भूलें हुई हैं, उनके लिए हमें पश्चात्ताप है। प्रभो ! तू बल दे, हम फिर वैसी भूल न करें, तेरा सङ्ग न छोड़ें। तेरी शरण में इसलिए आये हैं कि–**'आपिः पिता प्रमतिः सोम्यानाम्'** शान्ति के अभिलाषियों का तू ही प्राप्तव्य बन्धु तथा सुध लेने वाला पिता है। शान्ति की खोज में हम बहुत भटके हैं। ऐसे भटके हैं कि शान्ति के स्थान में उलटा अशान्ति का आगार बन गये हैं। ज्ञानीगुरु ने बताया–जगत्पिता की शरण में जाओ, क्योंकि पिता से बढ़कर सन्तान का रक्षक और कौन हो सकता है ? अतः हम तेरी शरण में आये हैं, क्योंकि तू–**'भूमिरस्यृषिकृन्मर्त्यानाम्'** संसार-चक्र का चलाने वाला तथा मनुष्यों को ऋषि बनाने वाला है। **'साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुः'** (निरुक्त)–पदार्थों के धर्मों का जिन्हें साक्षात्कार होता है, वही ऋषि होते हैं। जो तेरी शरण में आता है, उसका अज्ञानान्धकार हटाकर तू उसे ऋषि बना देता है। हम तेरी शरण में आये हैं। हमें भी ऋषि बना और अपना-आपा दिखा। प्रभो! तूने स्वयं कहा है–

अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः।
यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्।।

–ऋ० १०।१२५।५

मैं स्वयं ही विद्वान् और साधारणजनों के प्रीति-साधक इस वचन को कहता हूँ कि जिस-जिसको चाहता हूँ उस-**उसको उग्र, उसको वेदवेत्ता, उसको ऋषि तथा उसको सुमेधाः** = उत्तम मेधावी बना देता हूँ। पिता ! तू मुझे भी चाह और ऋषि बना, तू जिस तरह मुझे चाहने लगे, मुझे वह राह बता और उस पर चला। **(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

लुधियाना पहुंचो लुधियाना पहुंचो

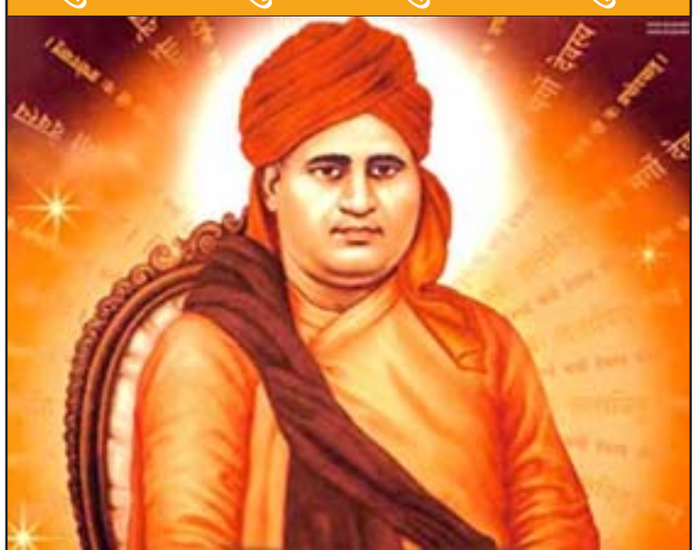

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.), गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 193वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में एक भव्य समारोह का आयोजन आर्य महिला कालेज, सिविल लाईन्ज लुधियाना में 19 फरवरी 2017 को प्रातः 9.00 बजे से दोपहर 1.00 बजे तक होगा। इसी उपलक्ष्य में 18 फरवरी 2017 को 10.30 बजे विशाल शोभायात्रा लुधियाना में निकाली जा रही है। इस समारोह में आर्य जगत के प्रसिद्ध सन्यासी **स्वामी सम्पूर्णानन्द जी करनाल एवं आचार्य विश्वामित्र जी बिजनौर** पधार रहे हैं। आप इस भव्य समारोह में परिवार सहित सादर आमंत्रित हैं।

-: निवेदकः-

श्री सुदर्शन शर्मा सभा प्रधान

श्री प्रेम भारद्वाज सभा महामंत्री

तेन त्यक्तेन भुन्जीथा मा गृधः

-ले० अभिमन्यु कुमार खुल्लर 22, नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 (म. प्र.)

लेख का शीर्षक ईशोपनिषद् के प्रथम मंत्र का अंश है। वर्तमान् आर्थिक भूचाल के विषय में अपने विचार प्रस्तुत करने के लिये यहीं मंत्रांश उपयुक्त प्रतीत हुआ।

मंत्र है

ओ३म् ईश्वास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत।

तेन त्यक्तेन भुन्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम।।

महर्षि दयानंद सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम सम्मुलास में इसका अर्थ करते हैं-हे मनुष्य ! तू, जो कुछ इस संसार में जगत है, उस सब में व्याप्त होकर नियन्ता है, वह ईश्वर कहाता है। उससे डर कर तू, अन्याय से किसी के धन की आकांक्षा मत कर। उस अन्याय के त्याग और न्यायारूपाचरण धर्म से अपने आत्मा से आनन्द को भोग। पृष्ठ 126

श्री सत्यव्रत सिद्धांतालंकार ने अपने भाष्य में इसका अर्थ किया है-

''इस जगती में जो जगत है, वह ईश द्वारा बसा हुआ है, इसलिये त्यागपूर्वक भोग करो। किसी दूसरे के धन की आकांक्षा मत करो।'' व्याख्या में निम्न वाक्य शीर्षक के अर्थ को अधिक स्पष्ट करते हैं- संसार में सब वस्तुएं उसकी (ईश) हैं। अतः उसकी वस्तु को अपना समझना तो चोरी के समान है। जो दूसरे के पास है, उसे अपनाने का प्रयत्न करना तो उसकी दृष्टि में दोहरी चोरी है।'' दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि मृत्यु के बाद सब धनैश्वर्य, सत्ता-सुख, वैसा का वैसा ही यहीं रह जाता है। इसीलिये मंत्रांश में कहा गया है-'ईश्वर द्वारा प्रदत्त समस्त सुख-समृद्धि का त्याग भाव से भोग करो। 'मा गृधः' गिद्ध मत बनो, लूट खसोट मत करो, अनुचित तरीकों से धन अर्जित व संग्रह मत करो।'

यह सोच आध्यात्मिक स्तर की है। मानव की सुख-शांति का आधार है। यह नहीं कि वेद में धन की आवश्यकता के महत्व को, कम आंका गया है। इसके विपरीत वयम् स्याम पतयो रयीणाम' में धनैश्वयों के स्वामी होने की प्रार्थना की गई है। ईशोपनिषद के उपरोक्त मंत्र में अर्जित धन के उपयोग की सीमा निर्धारित की गई है। संत वाणी भी इस भाव की पुष्टि करती है-

1. सांई इतना दीजिए, जामें कुटुम समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।।

2. गौ-धन, गज-धन, बाजि-धन और रतन धन खान।
जब आवे संतोष धन, सब धन धूरि समान।।

3. पूत सपूत तो क्यों धन संचय।
पूत कपूत तो क्यों धन संचय।।

धन के आविर्भाव के साथ ही धन-संग्रह की प्रवृत्ति मानव के रक्त में घुल-मिल गई। धन संग्रह की प्यास, कामाग्नि की प्यास से कम नहीं है। यह पिपासा धन जितना संग्रह किया जावे, भोग किया जावे, उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। इसीलिये मनीषियों ने धनोपार्जन में शुचिता, पवित्रता का तत्व अनिवार्य कर दिया। पुरूषार्थ से, ईमानदारी से अर्जित किया अन्न ही शरीर व आत्मा को बल देता है। कहा भी गया है-''जैसा खाओ अन्न, वैसा होवे मन।'' अर्थ-शुचिता का ध्यान रखने के कारण ही, श्रीकृष्ण महाराज ने दुर्योधन के स्वादिष्ट, षड़रस भोजन की अपेक्षा, महात्मा विदुर का आतिथ्य स्वीकार किया।

अब आईए वर्तमान् में। डॉ० पट्टाभी सीतारमैया के अनुसार- गाँधी जी द्वारा संचालित स्वतंत्रता प्राप्ति के संघर्ष में 85 प्रतिशत से अधिक आन्दोलनकारी आर्यसमाजी थे। आर्यसमाज ने कोई राजनीतिक दल नहीं बनाया। गाँधी जी के दुराग्रह के चलते राष्ट्रवादी, कर्मयोगी, सरदार वल्लभ भाई पटेल के स्थान पर, कैम्ब्रिज-इंग्लैण्ड में शिक्षा प्राप्त, अंग्रेजियत के रंग में रंगा, पाश्चात्य, मुस्लिम व भारतीय संस्कृति का अपमिश्रण, 'नरम' पं० जवाहरलाल नेहरू प्रधानमंत्री बना।

जोर-शोर से, वर्षों प्रचारित किया गया कि गाँधीजी के अंहिसात्मक आन्दोलन से ही देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। यशगान हुआ-दे दी हमें आजादी बिना खड़ग, बिना ढ़ाल, साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल।

स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये 90 वर्ष के संघर्ष में अनगिन जानें गई। लाखों घर बेघर-बार हुए। जेल की भीषण, अमानवीय यातना सही। याद है आपको ? वीर विनायक दामोदर सावरकर को कालापानी-अंडमान की जेल में बैल के स्थान पर जोत कर कोल्हू चलवाया गया था। जनमानस की स्मृति को सदा, सर्वदा के मिटाने के लिये वे समस्त संत और सुधारक जिन्होंने आजादी की आधारशिला रखी, क्रांतिकारी-समूह, धार्मिक और सामाजिक परिवर्तन के लिये अपना सर्वस्व झोंकने वाले महामानव, सभी भुला दिए गए। लगभग 60 वर्ष तक कांग्रेस ने केन्द्र व प्रदेश में शासन किया। कांग्रेस ने भ्रष्टाचार, लूट-खसोट व धन-लोलुपता को ही अपनी संस्कृति, अपनी पहचान बना लिया। मुख्यमंत्री पद पर वे ही आसीन हो पाते थे, जो प्रधानमंत्री ही नहीं उसके बेटे के पैरों में चप्पल पहिनाते थे। विरूद गान करते थे-'इण्डिया इज इंदिरा, इंदिरा इज इण्डिया'। दूसरा वर्ग वह था जो कांग्रेस कोष भरने के लिये वचनबद्ध हो जाता था। एक मुख्यमंत्री के संबंध में ग्वालियर में यह किंवदन्ती थी कि उन्हें दिल्ली दरबार में प्रतिमाह चालीस लाख रूपया चढ़ावा भेंट करना पड़ता था।

राजनीति का यह स्वरूप हो गया कि एक बार, केवल एक बार सत्ता पर अधिकार जमा लो; लूट खसोट कर, धन अर्जित कर लो। सत्ता और अर्थतंत्र पर कन्ट्रोल सदा सर्वदा के लिये हो जावेगा। सत्ता वंश परम्परागत बना दी गई। कहा जाने लगा-डॉक्टर का बेटा, डॉक्टर। इंजीनियर का बेटा, इंजीनियर बनेगा तो नेता का बेटा नेता नहीं तो क्या बनेगा ? सवैंधानिक प्रावधान न होने के कारण राजनीतिक पदों पर आसीन होने के लिये शिक्षा की आवश्यकता नहीं है। मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री व मंत्री पद पर अशिक्षित, अर्द्धशिक्षित, किसी को भी पदासीन कराया जा सकता है।

आईए, अब 60 वर्षों के शासन में अर्थतंत्र के स्वरूप और राजनीति में उसकी भूमिका की चर्चा की जावे। राजनीति में एकाधिकार प्रवृत्ति ने उद्योग और व्यापार में पहले से ही मौजूद एकाधिकार प्रवृत्ति की जड़ों में खाद-पानी डाला। कार निर्माण में घनश्यामदास बिड़ला का एकाधिकार था। देश-प्रदेश के शासन के कर्णधारों में, उच्च पदों पर आसीन कर्मचारियों के लिये अम्बेसेडर कार ही उपयुक्त समझी गई। निर्माण से लेकर विक्रय तक एकाधिकार बिड़ला जी के पास ही रहा। शासन तंत्र में अम्बेसेडर का वर्चस्व अभी बना हुआ है। अन्य धनाढ्यों ने और भी नायाब तरीके अपनाए। बजट प्रावधानों की बजट पारित होने से पूर्व जानकारी प्राप्त कर करोड़ो कमाए। अर्थतंत्र, पूरी तरह जमाखोरों, कालाबाजारियों के हाथों में सिमट गया। कभी शक्कर, कभी प्याज, कभी टमाटर की न्यूनता पैदा करके बेहिसाब मूल्य बढ़ाकर, अभूतपूर्व लाभ कमाया। व्यापार और उद्योग में लाभ अर्जन की सीमा ही नहीं रही। 100 से 1000 प्रतिशत तक, कुछ भी लिया जा सकता था, लिया जाता है। दवा निर्माता कंपनियों का यह चलन जग जाहिर है।

कांग्रेस के बाद अस्तित्व में आये, एकाध को छोड़, सभी राजनैतिक दलों ने सत्ता व अर्थ-तंत्र पर अधिकार जमाने का कांग्रेसी तरीका अपनाया। जातिवाद, वर्ग-संघर्ष, सवर्ण, गैर-सर्वण का छौंका लगाया और कुछ वर्षों में ही करोड़पति, अरबपति बन गए। इस तरह अर्जित धन को गुप्त बनाने में चार्टर्ड अकाउण्टेण्ट्स व टैक्स एक्सपर्ट वकीलों का भरपूर सहयोग मिला। एक उपाय के रूप में टैक्स हैवन देशों की बैंकों में काला धन

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय.....

19 फरवरी को लुधियाना पहुंचे

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में पंजाब की सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के सहयोग से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मदिवस पर 19 फरवरी को आर्य कॉलेज महिला विभाग सिविल लाईन्ज लुधियाना में आर्य महासम्मेलन के रूप में भव्य समारोह का आयोजन किया जा रहा है। पंजाब की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के महानुभावों से निवेदन है कि इस भव्य समारोह में बढ़-चढ़ कर भाग लें। आप सभी के पावन सहयोग से इस आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। आर्य समाज के संस्थापक युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मदिवस पर इस भव्य समारोह को करने का प्रयोजन यह है कि महर्षि दयानन्द जी का जीवन वैदिक संस्कृति एवं वेदों के प्रति समर्पित रहा है। वेदों के प्रचार एवं प्रसार को स्थाई रूप देने के लिए ही उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की थी। आर्य समाज का मुख्य लक्ष्य वेद प्रचार और वेद पर आधारित महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों का प्रचार और प्रसार करना है। आर्य समाज की स्थापना करने के पीछे महर्षि दयानन्द का मुख्य उद्देश्य लोगों को पाखण्ड़ों, अन्धविश्वासों, सामाजिक कुरीतियों, मूर्तिपूजा के श्राप से मुक्त करना था। अपना आशय स्पष्ट करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी लिखते हैं कि मेरा किसी भी नवीन मत को चलाने का लेषमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना-मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुडवाना मुझको अभीष्ट है अर्थात् यूं कहें कि महर्षि दयानन्द सरस्वती का उद्देश्य संसार में सत्य पर आधारित वेद के सिद्धान्तों को पुनर्स्थापित करना था। महाभारत युद्ध के पश्चात हम जिस रसातल की ओर जा रहे थे। अपने सत्य ग्रन्थ वेदों को भूलकर पुराणों और अनार्ष ग्रन्थों में पड़कर समाज में बहुत सी नई कुरीतियों ने जन्म लिया था। मूर्तिपूजा के कारण समाज की बहुत हानि हो रही थी। लोग अपनी संस्कृति और सभ्यता को भूलकर पाश्चात्य संस्कृति की ओर उन्मुख हो रहे थे। सामाजिक कुरीतियों के कारण समाज कई टुकडों में बंट चुका था। जातिवाद और छूआछूत के कारण लोगों में एक दूसरे के प्रति द्वेष और छल कपट की भावनाएं थी। जिसके परिणामस्वरूप हम पहले मुगलों के आधीन रहे और उसके पश्चात हमें अंग्रेजों की दासता सहनी पड़ी। ऐसे समय में एक ऐसी क्रान्ति की आवश्यकता थी जो राष्ट्र को जहां सामाजिक कुरीतियों से मुक्त कर सकें वहीं पर धर्म पर नाम पर हो रहे व्यापार से लोगों को छुटकारा मिले। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना करके ऐसी क्रान्ति को जन्म दिया जिससे धर्म के नाम पर व्यापार करने वालों की जड़े हिल गई और समाज में फैल रही कुरीतियों से भी लोगों से छुटकारा मिला। आर्य समाज ने एक ऐसी क्रान्ति को जन्म दिया जिसे धधकती आग का नाम दिया गया। जिस आग में सभी सामाजिक कुरीतियां जलकर भस्म हो गई। इसके साथ ही लोगों में स्वतन्त्रता के प्रति भाव जागृत हुए। आर्य समाज ने अपने आरम्भिक काल से लेकर आज तक समाज को एक नई दिशा देने का कार्य किया है और आगे भी करता रहेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस मनाने के पीछे यह उद्देश्य है कि लोगों में महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज के प्रति जागरूकता बढ़े। जब तक आर्य समाज का प्रचार एवं प्रसार नहीं होगा तब तक महर्षि दयानन्द के कार्यों के प्रति लोग जागरूक नहीं होंगे। वैदिक सिद्धान्त ही आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त हैं। आज समय की मांग है कि राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक जागरूक होकर समाज के प्रति अपने कर्त्तव्य का जिम्मेदारी के साथ वहन करे। यह काम केवल आर्य समाज कर सकता है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सदैव इस कार्य के लिए प्रयासरत है कि आर्य समाज के लक्ष्य और उद्देश्य के प्रति आम जनता को जागृत किया जाए। इसके लिए सभा में वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर दिया जाता है। पंजाब प्रान्त के साथ-साथ अन्य प्रान्तों के लोग भी सभा कार्यालय में प्रचारार्थ साहित्य लेने के लिए आते हैं। इसलिए सभी आर्य समाजें लोगों में नि:शुल्क साहित्य बांट कर आर्य समाज के प्रचार एवं प्रसार के कार्य को आगे बढ़ाने में सहयोग करें। इसके साथ ही सभा के द्वारा सभी संस्थाओं एवं गुरूकुलों को आर्थिक सहयोग दिया जाता है ताकि वेद प्रचार का कार्य चलता रहे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के नेतृत्व में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब निरन्तर आगे बढ़ रही है। जहां वे स्वयं दानशील हैं, समाज के कार्यों में, परोपकार के कार्यों में हमेशा आगे रहते हैं उसी प्रकार सभी को ऐसे कार्यों के लिए प्रोत्साहित करते रहते हैं। सभी कार्य सहयोग और उत्साह के साथ ही सम्पन्न होते हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आप सबके सहयोग से कार्यक्रमों का आयोजन करती है और वेद प्रचार के कार्यों को इसी प्रकार जारी रखेगी।

अंत में मैं सभी आर्य समाजों, एवं शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों निवेदन करता हूं कि इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना भरपूर सहयोग दें। अपनी-अपनी आर्य समाजों की तरफ से भारी संख्या में लोगों को लुधियाना लेकर आएं। अपनी-अपनी आर्य समाज एवं संस्थाओं के बैनर एवं ओ३म् के ध्वजों से वाहनों को सजाएं और महर्षि दयानन्द के जयघोष करते हुए उत्साह के साथ लुधियाना पधारें। सभा के सभी कार्य आप सबके सहयोग से ही आगे बढ़ रहे हैं। आगे भी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आपसे इसी प्रकार सहयोग लेकर आर्य समाज के प्रचार एवं प्रसार को जारी रखेगी। सभी आर्य समाजें एकजुट होकर वेद प्रचार के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए आर्य महासम्मेलन की तैयारी के लिए जुट जाएं। अपनी -अपनी आर्य समाजों से आने वाले लोगों की सूची बनाकर सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें ताकि आयोजक भोजन एवं अन्य व्यवस्थाओं का समुचित प्रबन्ध कर सकें। आशा है कि आप सबका इस कार्य के लिए भरपूर सहयोग मिलेगा।

-प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री

75 वां वार्षिक उत्सव

आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर का 75वां वार्षिक उत्सव 13 फरवरी सोमवार से 19 फरवरी रविवार तक हीरक जयन्ती के रूप में बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर प्रसिद्ध वैदिक प्रवक्ता पं. सुन्दर लाल शास्त्री जी चण्ड़ीगढ़ के प्रवचन तथा श्री राजेश अमर प्रेमी जी जालन्धर के भजन होंगे। यज्ञ के ब्रह्मा आर्य समाज के पुरोहित आचार्य रमेश शास्त्री जी होंगे। इससे पूर्व 12 फरवरी को माघ मास के चलने वाले गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति सांयकाल 3 बजे से 5 बजे तक होगी। आप सभी धर्मप्रेमी महानुभावों से निवेदन है कि परिवार सहित इस कार्यक्रम में पधार कर कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाएं एवं धर्म लाभ प्राप्त करें।

इन्द्र कुमार शर्मा आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़

''अकाल मृत्यु भूत-प्रेत योनि की विवेचना''

-ले० पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबिन्द राय आर्य एण्ड सन्स १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता-700007

भूत-प्रेत की उत्पत्ति के विषय में कुछ अज्ञानी, अर्धशिक्षित और स्वार्थी लोगों में यह धारणा बनी हुई है कि जिनकी अकाल मृत्यु होती है, अर्थात् जिनकी मृत्यु दुर्घटना से या अस्वाभाविक मृत्यु होती है। ये लोग अपने शेष जीवन में भूत-प्रेत योनि में चले जाते हैं। यह सर्वमान्य बात है कि जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु निश्चित है। यह बात भूत-प्रेत पर भी लागु होनी चाहिए। जीव ने यदि भूत-प्रेत की योनि में जन्म लिया है तो उसकी मृत्यु भी होनी चाहिए, परन्तु उनके मरने की बात कभी सुनने में नहीं आई।

अर्थात् मृत्यु प्राप्त जीव भूत-प्रेत की योनि में जाते हैं, यह सिद्धान्त कीट-पतंग, पशु-पक्षी और अनेकों अदृश्य जीवों पर भी लागू होनी चाहिए, जो प्रतिदिन मनुष्यों द्वारा मारे जाते हैं या मार दिये जाते है या प्राकृतिक आपदाओं-आंधी, तूफान, भूकम्प, बाढ़ आदि में मनुष्यों से अधिक मर जाते हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार इनको भी भूत-प्रेत की योनि में जाना चाहिए ? तब कल्पना करें कि इस संसार में भूतों की संख्या मनुष्यों की आबादी से भी कई गुना अधिक होनी चाहिए, किन्तु ऐसा देखने में नहीं आता है। अत: यह कहना कि अकाल मृत्यु प्राप्त जीव भूत-प्रेत की योनि में जन्म लेते है, यह न तर्क सम्मत है और न विज्ञान सम्मत है।

भूत-प्रेत की योनि होती ही नहीं-जीव का स्थूल शरीर, मन व इन्द्रियादि साधनों के साथ ईश्वरीय व्यवस्थानुसार संयोग जन्म है। अर्थात् सूक्ष्म शरीर शुक्र जीव का स्थूल शरीर के साथ संयोग का नाम ही योनि है। केवल सूक्ष्म शरीर के आधार पर भूत-प्रेत योनि को प्रमाणिक नहीं माना जा सकता है, क्योंकि बिना शरीर के कोई भी योनि नहीं होती है। स्थूल शरीर के बिना कोई भी सूक्ष्म शरीर न तो दिखाई देता है और न कोई भौतिक क्रिया ही कर सकता है। प्रजनन की विधाओं के आधार पर योनियों को चार भागों में विभाजित किया गया है-जरायुज, अण्डज, स्वेदज, और उदभिज्ज। जरायुज का तात्पर्य है जोर से होने वाले प्राणी जैसे मनुष्य, गाय, भैंस। अण्डज का तात्पर्य है अण्डे से होने वाले प्राणी जिसमें अधिकतर पक्षी आ जाते हैं। स्वेदज का तात्पर्य मैल या गन्दगी में पैदा होने वाले प्राणी, जैसे जूएँ, पानी नाली के किटाणु। उदभिज्ज का तात्पर्य है, जमीन से उगने वाले प्राणी जैसे पेड़-पौधे। इन्हीं चार योनियों में समस्त प्राणियों का समावेश हो जाता है। इसके अतिरिक्त पाँचवीं योनि का कोई विधान नहीं है। यह ईश्वर प्रणीत शाश्वत सिद्धान्त है। इसका उल्लंघन करने की शक्ति किसी भी जीव में नहीं है। स्मरण रहे जीव सर्वदा ईश्वराधीन होता है। वेद, शास्त्र, रामायण, और गीता आदि प्राचीन ग्रन्थों में कहीं पर भी भूत-प्रेत की योनि का विधान नहीं है।

कहा यह जाता है, जिनकी अकाल मृत्यु होती है यानि जिनकी मृत्यु दुर्घटना से या अस्वाभाविक मृत्यु होती है, ये लोग शेष जीवन में भूत-प्रेत योनि में चले जाते हैं और इधर-उधर भटकते रहते हैं। कभी-कभी यह भूत-प्रेत परकाया में प्रवेश कर जाते हैं और उनको सताते है या कष्ट देते है। वे सामान्यता अपने परिचितों और स्वजनों को ही अधिक परेशान करते है या कष्ट देते हैं। दिवंगत आत्मा का इधर-उधर भटकना, सम्भव नहीं, क्योंकि वह ईश्वराधीन होने के कारण स्वतन्त्रता से कुछ भी नहीं कर सकता है। परकाया में प्रवेश करना भी ईश्वरीय नियम के विरुद्ध है, क्योंकि एक शरीर में एक ही आत्मा रह सकती है। आत्मा प्रलय काल और मोक्षावस्था को छोड़कर वह बिना शरीर के कभी नहीं रहता है। इन दोनों अव्यस्थाओं में वह अदृश्य रहता है।

यह निर्विवाद सत्य है कि मृत्यु के पश्चात् ईश्वरीय व्यवस्थानुसार जीव या तो दूसरे शरीर को धारण कर लेता है या मोक्ष को प्राप्त होता है। इस बीच उसके किसी अन्य के शरीर में प्रविष्ट होने या इधर-उधर घूमकर लोगों के जीवन में अच्छा-बुरा दखल देने का प्रश्न ही नहीं उठता है। मोक्ष प्राप्त जीवात्माएँ पवित्र और आनन्द मग्न रहती है, वह परकाया में प्रवेश कर किसी मनुष्य को कष्ट या यातनाएं दें, यह मानना अस्वाभाविक है।

मृत्यु के पश्चात् जीव को एक शरीर से निकलकर दूसरे शरीर में जाने में कितना समय मिलता है, इसका निर्देश वेदान्त दर्शन ६।१।१३ बृहदारण्यक उनिषद तथा गरुड़ पुराण-प्रेत अध्याय १०, श्लोक ६५ में लिखा है कि-जैसे घास की सूंडी या जोंक या तृणजलायुक्त तब पीछे से दूसरा पाँव उठाती है जबकि अगला पाँव रख लेती है, ठीक वैसे ही आत्मा भी अपने पहले शरीर को छोड़ने से पूर्व ईश्वर की न्याययुक्त कर्मफल व्यवस्था से अगले शरीर में स्थिति कर लेने के पश्चात् ही अपने इस शरीर को छोड़ता है।

स्थूल शरीर के बिना कार्य करना सम्भव नहीं अत: ईश्वर की व्यवस्था में यह आत्मा एक शरीर को छोड़ कर दूसरे शरीर का तुरन्त ग्रहण कर लेता है। महाभारत वनपर्व में कहा है-आयु पूर्ण होने पर आत्मा अपने जर्जर शरीर का परित्याग करके उसी क्षण किसी दूसरे शरीर में प्रकट होता है। एक शरीर को छोड़ने और दूसरे शरीर को ग्रहण करने के मध्य में उसे क्षण भर का समय भी नहीं लगता। अत: वैदिक सिद्धान्त के अनुसार मृत्यु और जन्म के बीच कोई ऐसा समय ही नहीं बचता कि जिसमें जीवात्मा इधर-उधर भटक सके या भूत-प्रेत बन सके। सच्चाई यह है कि शरीर छोड़ने के पश्चात् जीवात्मा परमात्मा के अधीन रहता है और वह स्वतंत्रता से कुछ नहीं कर सकता। संसार का कोई भी व्यक्ति भूत-प्रेत आदि के अस्तित्व को प्रमाणित नहीं कर सकता, अत: निश्चित मानिये कि तथा कथित भूतों की न कोई सत्ता है और न कोई योनि है।

सच्चाई यह है कि दुर्घटना या अस्वाभाविक मृत्यु प्राप्त व्यक्ति अपनी बाकी की उम्र अगली योनि में व्यतीत करता है अर्थात् उसकी जो अगली योनि में जितनी उम्र निर्धारित होती है उसमें पहले वाली बाकी उम्र जोड़ दी जाती है। अब प्रश्न उठता है कि मृत्यु प्राप्त व्यक्ति यदि मनुष्य यौनि में भी उसी स्तर में जन्म लेता है तब तो यह बात लागु हो सकती है। पर वह यदि अन्य योनियों में यानि पशु-पक्षी व कीट-पतंग की योनि में जाता है या पहले वाले मनुष्य जीवन के ऊँचे या नीचे स्तर जो मनुष्य योनि ही पाता है तो उसकी आयु ईश्वर की कर्म न्याय व्यवस्था के अनुसार कट या बढ़ भी सकती है।

यह लेख मैंने अति उपयोगी समझ कर ''मानव निर्माण प्रथम सोपान'' नामक पुस्तक के उद्धृत किया है जिसमें अन्त की ५-६ लाईनें मैंने अपने स्वयं के विचार से लिखी है। जिससे लेख के उद्देश्य की पूर्त्ति होती है। इस लेख के पढ़ने से हर व्यक्ति भूत-प्रेत की योनि नहीं होती यानि भूत-प्रेत का भय एक प्रकार का बहम है इसलिए हर समझदार व्यक्ति को नहीं अपनाना चाहिए और अपने बच्चों को भी यही शिक्षा देनी चाहिए ताकि बच्चे निर्भीक बने और देश-सेवा अधिक कर सकें।

क्रोध से बचें

-ले० सेवक जागवानी

हम बचपन से अपने ऋषियों, मुनियों, योगियों, तपस्वियों, सन्तों, महात्माओं, गुरुओं, माता-पिता से सुनते आ रहे हैं कि काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार का त्याग करो। लेकिन हमने इनमें से एक भी दुष्प्रवृत्ति का त्याग करने का प्रयास ही नहीं किया। इस जगत में रहते हुए ऐसा लगता है कि लाख प्रवचन सुन लें फिर भी हमारे अन्दर इन दुष्प्रवृत्तियों के त्याग की सद्भावना जागृत ही नहीं होती। इसका मुख्य कारण है कि हमने इसका अभ्यास नहीं किया। कोई भी व्यवसाय हो चाहे चिकित्सा, अभियांत्रिकी, कानून, राजनीति, व्यापार आदि सबके लिए अभ्यास की आवश्यकता पड़ती है। यदि हम प्रयास करें तो निश्चित रूपेण इन पांचों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) में से किसी एक का चयन कर लें और दृढ़ निश्चय करें कि इसका त्याग करना है। कहते हैं-''करत-करत अभ्यास से जड़मत होत सुजान।'' हम यथा संभव क्रोध नहीं करेंगे। हम पहले समझने का प्रयास करेंगे कि क्रोध है क्या ? क्रोध को एक प्रतिकूल परिस्थिति के लिए एक ऋणात्मक शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक एवं पर्यावरणीय प्रतिक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है। क्रोध एक पूर्णतया सामान्य प्राय: स्वस्थ मानव मनोभाव है। लेकिन जब यह अनियंत्रित हो जाए और विनाशकारी बन जाए, फिर यह हमारी जीवन की समग्र गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है। क्रोध एक ऐसी भावना है जिसका संबंध किसी व्यक्ति विशेष की मनोवैज्ञानिक व्याख्या है जिससे वह अप्रसन्न एवं रुष्ठ है। उसके साथ कुछ अवांछनीय पापमय, भ्रान्तिपूर्ण, अनैतिक, दोषपूर्ण अनर्थ हुआ है। उसकी बात को अस्वीकार किया गया हो और यह एक प्रतिशोध, बदले की भावना द्वारा प्रतिक्रिया करने की दुष्प्रवृत्ति है।

क्रोध अविवेक तथा मोह का जन्मदाता है एवं पूर्णतया हिंसक मार्ग है। इससे सोच समझ की क्षमता पूर्णतया नष्ट हो जाती है। क्रोध के दुष्परिणाम होते है अपमान और अपयश। क्रोध नियंत्रण के लिए स्व-अनुशासन सर्वश्रेण्ठ मंत्र है। क्रोध एक ऋणात्मकता दुर्भावना है। इसकी ऐसी गुप्त कृपा होती है कि इसका आलिंगन करने वाला व्यक्ति उत्तेजना अशान्ति, घबराहट, ऋणात्मक, शोक, विषाद, दु:ख, व्यथा, संताप, विपत्ति, पश्चाताप, शत्रुता, वैर, दुश्मनी, विद्वेष, वैमनस्य, बदला लेने, प्रतिशोध, प्रतिकार की ज्वलंत अग्नि में जलता रहता है।

क्रोध पर नियंत्रण करना कठिन कार्य है, लेकिन असंभव नहीं। मनुष्य क्या नहीं कर सकता ? वह क्रोध जैसी ऋणात्मकता को बड़ी आसानी से धनात्मक ऊर्जा में रूपान्तरित कर सकता है। अक्रोध का परिचय देने वाला व्यक्ति अति कुशल, दक्ष, फुर्तीला, महान, भव्य, उदार, प्रभावशाली, उत्कृष्ट, उत्तम, विशाल हृदयवाला महानुभाव बन सकता है। वह सदैव ईश्वर एवं दूसरों के प्रति कृतज्ञता का सद्भाव प्रकट करता रहता है। उत्कर्षता, श्रेष्ठता, विशिष्टता सदैव उसके समीप रहती है। वह सबके लिए आदर, श्रद्धा, सम्मान का कृपा-पात्र बन जाता है।

क्रोध को बहुत से लोग व्यक्त करते हैं, कुछ उसे दबा देते हैं, और कुछ लोग ऐसी परिस्थिति में शान्त रहते हैं। क्रोधावेश होने पर तत्काल किसी धनात्मक विचार पर ध्यान को केन्द्रित करने की आवश्यकता पड़ती है। क्रोध को रचनात्मक व्यवहार में परिवर्तित करने का प्रयास करना चाहिए। अन्ततोगत्वा हम अपने आप को अन्दर से शान्त कर देते हैं। हमें केवल बाह्य व्यवहार को ही नियंत्रित नहीं करना, अपितु अपने आन्तरिक व्यवहार को भी नियंत्रण में रखना है।

यदि क्रोध पर नियंत्रण न किया गया तो यह न केवल उस व्यक्ति विशेष के लिए अनर्थकारी हो सकता है, अपितु सम्पूर्ण मानव समाज के लिए यह हानिकारक सिद्ध होगा। क्रोध एक है लेकिन यह अनेक रूप धारण करने की अद्भुत् क्षमता रखता है जैसे असन्तोष, अप्रसन्नता, उत्तेजना, क्षोभ, प्रदाह, जलन, चिड़चिड़ाहट, अरुचि, नापसंद आदि। जब भी किसी व्यक्ति ने नैराश्य, विफलीकरण, हार, पराजय, आलोचना, निन्दा या धमकी के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की है, फिर वह क्रोध को प्रकट करने में पीछे नहीं हटता। ऐसी स्थिति बन जाती है कि लड़ो या भागो। एक बार यह संकट स्थिति शान्त हो जाए, फिर अप्रसन्नता भी अपना स्थान स्वत: त्याग कर देती है।

क्रोध व्यक्ति को अनिर्णय की स्थिति में पहुँचा देता है और उसकी विचार शक्ति दुर्बल, क्षीण, विकृत हो जाती है और अन्तत: उसे अति क्षति, हानि का सामना करने के लिए विवश होना पड़ता है। व्यक्ति अविवेकी, हठीला, असंतुलित, असंगत बन जाता है। मानव की मस्तिष्क रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति पर कुप्रभाव पड़ने के कारण शरीर और मन शिथिल पड़ जाते हैं, हृदय गति ऐसी स्थिति में बढ़ जाती है और रक्तचाप भी बढ़ जाता है। परिणामत: तनाव हार्मोन के स्तर भी बढ़ जाते हैं। प्रचण्ड हिंसात्मक क्रोध हमारे व्यवहार, ज्ञान एवं संपूर्ण शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता है। क्रोध के कारण ज्ञान के ऊपर पर्दा लग जाता है और शरीर के महत्त्वपूर्ण अंग आवश्यकरूपेण कुप्रभावित होते हैं।

अनियंत्रित क्रोध व्यक्ति एवं व्यावसायिक संबंधों में दरार डाल देता है और इसके कारण सगे-संबंधियों के बीच में झगड़े हो जाते है। यह मानवीय शांति को भंग करने के लिए दृढ़संकल्पित है। यही कारण है कि अधिकांश लोग रक्तचाप, अंगाघात और हृदय रोग जैसी असाध्य रोगों के साथ जीने के लिए बाध्य हो गये हैं।

क्रोधित करने वाली सर्वसाधारण बाते हैं-अशिष्टता, अभद्रता, ढीठपन, अपमान, आपत्तिजनकता, कठोरता, कटुता, रूखापन, अभिमान, अपमान, मानभंग एवं अन्याय। तनावपूर्ण स्थितियों में क्रोध बढ़ता है जैसे भूख, दर्द, महामारी, यातायात चक्का जाम। कुछ भावनात्मक एवं शारीरिक तथा मानसिक अस्वस्थता के कारण भी क्रोध का अनुभव होता है। अपने किसी निकटतम, प्रियतम की मृत्यु पर शोक, परिवारिक जीवन में निराशा, असफलता, नास्तिकता, विश्वासघात, वित्तीय समस्याएं, महिलाओं में मासिक धर्म के पूर्व या पश्चात् समस्याएं आदि भी क्रोध को आमंत्रित करने में अपनी अहम भूमिका अदा करते हैं।

क्रोधावेश में नाड़ी स्पंदन तीव्र हो जाता है, श्वास लेने में तकलीफ होती है, बेअरामी का अनुभव होता है, अम्लता बढ़ जाती है और अनिद्रा के लक्षण भी प्रकट हो जाते हैं। रोग प्रतिरोधात्मक प्राणशक्ति दुर्बल हो जाती है। इससे उदासी (Depression), खाने-पीने में अनियमितता, मद्यपान, धूम्रपान, नशे की आदत, बदमिजाजी और निम्न स्वाभिमान क्रोध के परिणाम होते हैं।

एक स्वस्थ मन परिपूर्ण संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए उत्तरदायित्व निभाता है और एक ऋणात्मक मन क्रोध एवं रोग के लिए उत्तरदायी होता है। यदि हम जानना चाहते हैं कि भूत में हमारे क्या विचार एवं भावनाएं थीं, आज अपने शरीर पर दृष्टि डालें और यदि हम जानना चाहते हैं कि भविष्य में क्या होगा, हमें आज अपने विचारों एवं भावनाओं पर दृष्टि डालनी पड़ेगी। इस प्रकार क्रोध की भावना हमारे प्रत्यक्ष ज्ञान, विचारों, व्याख्याओं, अनुभवों और हमारी इच्छाओं की अभिव्यक्ति है।

क्रोध अवसर की बात नहीं है, यह हमारी इच्छा की बात है। धनात्मक विचारों से ही मानव समाज में प्रेम बढ़ेगा। स्वयं प्रसन्न रहने के लिए दूसरों को प्रसन्न करना पड़ेगा। स्वयं हँसने के लिए दूसरों को भी हँसाना होगा।

क्रोध के समय उस स्थान से हटकर शीतल जल पीएँ। अधिक बहस न करें। नियमित प्राणायाम एवं ध्यान का अभ्यास करें। प्रेम एवं तर्क में मधुर संबंध स्थापित करें। शांति पाठ करें।

फल की चिन्ता

ले. -नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' 602 जी एच 53 सैक्टर 20, पंचकूला मो. 09467608686, 01724001895

चिंता मनुष्य को दीमक की तरह अंदर से खोखला कर देती है। चिंता बी. पी. सुगर जैसी बीमारियों को जन्म देकर मनुष्य को चिंता की ओर धकेल देती है। चिंता और चिता में केवल एक बिन्दु का फासला है। लेकिन फिर भी मनुष्य सदैव अपने कर्म फलों की चिन्ता में दु:खी रहता है। हर व्यक्ति स्वतंत्रकर्ता के रूप में किसी भी कार्य को करने ना करने वा अन्यथा किसी अन्य प्रकार से करने के लिए स्वतंत्र होने के कारण अपने द्वारा संपादित हर कर्म का कर्ता और कर्ता होने के कारण ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में उसके फल का भोक्ता होता है। हर मनुष्य अपने द्वारा किए गए दुष्कर्मों को भलीभांति जानता है और यह भी मानता है कि उसके दुष्कर्मों का फल ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में दंड स्वरूप किसी विपत्ति कष्ट के रूप में अवश्य मिलेगा। हम सभी '**अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्**' के सिद्धांत से परिचित है। यह हमारे लिए संभावित फलों की चिन्ता का एक प्रमुख कारण है।

चिंता का दूसरा कारण उस फल की चिन्ता है जिसे हम प्राप्त करना चाहते हैं बिना पुरूषार्थ किए वांछित लक्ष्य की प्राप्ति की चिंता हमें बहुत सताती है। चिंता करने से लक्ष्य की दूरी और अधिक बढ़ जाती है। कर्म करने से मनुष्य उतना नहीं थकता जितना उस कर्म को करने वा फल की प्राप्ति की चिंता से थक जाता है। सीधे सरल शब्दों में चिंता हमारे कार्य करने की उर्जा को क्षीण कर देती है और चिंता में परेशान बिना कार्य को प्रारम्भ किए ही हतोत्साहित होकर थक कर बैठ जाता है। अब प्रश्न उठते हैं-

1. क्या बिना फल की कामना के कर्म संभव है ?

2. क्या फल की चिंता करनी चाहिए ?

3. फल की चिन्ता ना करें तो क्या करें ?

योगेश्वर कृष्ण ने तो विषाद में फंसे अर्जुन को गीता का संदेश देते हुए निष्काम भाव से किए गए परोपकार के यज्ञीय कार्यों को सर्वश्रेष्ठ कर्मों की श्रेणी में रखा। यह ठीक है कि फल की कामना मनुष्य को कर्म करने के लिए प्रेरित करती है लेकिन बिना कर्म किए फल की कामना चिन्ता का मुख्य कारण बनती है और ऐसे कर्म साधारणतया मनुष्य के स्वयं के स्वार्थ के वशीभूत होते हैं।

वैसे भी **कर्मण्यमे वाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन** कहकर योगेश्वर कृष्ण ने मनुष्य द्वारा कर्ता के रूप में कर्म करने पर तो अधिकार बताया है परन्तु फल की प्राप्ति के लिए कर्म का कर्ता ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के ही आधीन हैं अत: जब फल देना हमारे अधिकार क्षेत्र की बात नहीं है उस कर्म को ना करके अपने अधिकार क्षेत्र में बाहर की चिन्ता किसी भी व्यक्ति को उसके लक्ष्य तक कैसे ले जा सकती हैं। जैसे एक परीक्षार्थी के लिए परीक्षा की विषय वस्तु का ज्ञान लेना पढ़ना और परीक्षा देना तो उसके अधिकार में आता है परन्तु परीक्षाफल तो परीक्षक के अधिकार की बात है। फल की व्यर्थ चिंता तो हमें उस बंदर की तरह बना देती है जो रोजाना आम की गुठली को खोद कर देखता है कि पेड़ बना या आम लगा या नहीं। इस प्रकार वह उसे अंकुरित भी नहीं होने देता। हमारे कर्म तो बीज की तरह हैं जिन्हें हम खेत में पुरूषार्थ का हल चलाकर बो देते हैं और फिर अपनी ओर से कर्म करते हुए खाद पानी दवा से तैयार करते हैं लेकिन हमारे कर्मों के फलों की फसल तो समय आने पर ही तैयार होती है। यहां यह भी स्पष्ट है कि यदि हमने बबूल के बीज बोये हैं तो आम की फसल कभी नहीं होगी। अर्थात् जैसे कर्म करेगा वैसा फल देगा भगवान। फल की चिन्ता में हमारी हालत वैसी हो जाती है जैसे हम गाड़ी में साथ के सामान का बोझ नीचे रखकर उस पर बैठने के स्थान पर बोझों को सिर पर उठाकर बैठे हों। न्याय व्यवस्था में हमारे कर्मों का फल देना ईश्वर पर छोड़ देना ही उचित है। हमें तो केवल अपने अधिकार क्षेत्र अर्थात अपने द्वारा संपादित होने वाले कर्मों का चिन्तन मनन करना चाहिए। क्योंकि यदि कर्मों की दिशा यानि चलने का रास्ता उलटा होगा तो हम अपने लक्ष्य से दूर होते चले जायेंगे। वैसे भी स्वार्थ के वशीभूत किए गए कर्मों के फल की चिन्ता हमें उन कर्मों में लिप्त कर देती है और वह कर्म हमारे बंधन का कारण बनते हैं। जैसे यदि एक मधुमक्खी पराग चुन कर बनाए उस मधु का स्वाद लेने के लिए उसमें लिप्त हो जाए तो उसी शहद में फंस कर मर जाती है।

अब अन्त में प्रश्न आता है कि हम फल की चिन्ता ना करें तो क्या करें इसका सीधा सरल उत्तर है कि हम मनुष्यों को अपने अधिकार क्षेत्र अर्थात् स्वतंत्रकर्ता के रूप में केवल अपने कर्म के संपादन से पूर्व उस पर चिन्तन मनन करना चाहिए और निष्काम भाव से यज्ञीय वा परोपकार के सर्वहितकारी कार्यों को करते हुए फल ईश्वर की न्याय व्यवस्था पर पूर्ण आस्था रखते हुए उसकी चिंता उसी पर छोड़ देनी चाहिए।

राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस मनाया गया

आर्य समाज, धूरी में 26 जनवरी 2017 दिन गुरुवार को भारत के 68 गणतंत्र दिवस राष्ट्रीय ध्वज (आर्य सी० सै० स्कूल के प्रांगण) में फहराया गया। मुख्य मेहमान ए० पी० सोलवेक्स के चैयरमैन श्री पुरुषोत जी उर्फ काला व धूरी के समाज सेवी महाशय प्रतिज्ञा पाल जी ने ध्वजारोहण किया। उसके बाद आर्य सी० सै० स्कूल के छात्राओं राष्ट्रीय गान गाकर देश व ध्वज का स्वागत किया यह राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस आर्य समाज के प्रधान प्रहलाद आर्य अगुवाई में मनाया गया।

आर्य समाज के तत्वधान देख रेख में चल रहे शिक्षण संस्थाओं के छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। छात्र-छात्राओं ने पंजाब के लोक नृत्य गिद्दा-भांगड़ा और देश पर मर मिटने वाले सेनानियों श्री भगत सिंह राम प्रसाद विस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, खुदी राम बोस इत्यादि देश भक्तों की झांकीयां प्रस्तुत किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले छात्र-छात्राओं ईनाम दिया गया।

इसके बाद आर्य समाज के कार्यकारणी प्रधान विरेन्द्र कुमार गर्ग व मंच संचालन कर रहे आर्य समाज के महामंत्री रामपाल आर्य जी ने 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के बारे में विद्यार्थियों बताया।

आर्य समाज के प्रधान प्रहलाद आर्य जी ने आए हुए सभी आर्यों का धन्यवाद किया और बताया कि ऐसे आजादी के दीवाने सुभाष चन्द्रबोस, तात्यां टोपे, लाला लाला लाजपतराय इत्यादि महान देश भक्त क्रांतिकारीयों से हमें देश भक्त बनने के लिए प्रेरणा लेनी चाहिए। इस अवसर पर आर्य सी० सै० स्कूल, आर्य महिला कालेज यश चौधरी आर्य मॉडल स्कूल व प्रि० महाशय चेतराम टैक्नीकल इन्सटीचयूट, धूरी के विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। तथा आर्य समाज के सभी सदस्यगण व अधिकारीगण, स्कूल के अध्यापक अध्यापिका उपस्थित रहे। विकास शर्मा, राजेश आर्य, विजय आर्य, सोम प्रकाश आर्य राजिव मोहिल, डा० राम लाल आर्य, विकास जिन्दल, अशोक गर्ग, अशोक जिन्दल, सतीश पाल आर्य, पवन कुमार गर्ग, रमेश आर्य, धर्म देव हुमन, महाशय राजपाल आर्य, विवेक जिन्दल, बचन लाल गोयल, डा० सुरजीत सरीन श्रीमति कृष्णा आर्य, मधुरानी आर्य कुसुम गर्ग, दर्शनादेवी, शिमला देवी निगम पाल आर्य, स्त्री आर्य समाज के सभी सदस्या उपस्थित थी व प्रिसिपल बी० एल० कालीया, मोनिका वाटस, श्रीमति निशा मित्तल व सभी आर्यलोग उपस्थित थे। **-प्रधान प्रहलाद कुमार आर्य आर्य समाज, धूरी**

पृष्ठ 2 का शेष-तेन त्यक्तेन भुन्जीथा मा गृधः

जमा करा दिया जाने लगा। देश में दो समानान्तर अर्थव्यवस्थाओं ने जन्म लिया। एक शासन द्वारा संचालित, दूसरी भ्रष्टाचारियों द्वारा संचालित।

शत्रु देशों ने अपने देश में भारत के नकली नोट छापकर आतंकवाद को अनपाया। नक्सली अर्थ-व्यवस्था का आधार भी नकली नोट बने। पूरी अर्थव्यवस्था चरमचा गई। गरीब और अमीर की खाई सीमातीत हो गई।

इस पृष्ठ भूमि में, स्वतंत्रता प्राप्ति के 78 वर्षों बाद नरेन्द्र मोदी का भारत की राष्ट्रीय राजनीति में प्रवेश हो रहा था।

मार्च, 2013 में प्रकाशित अपने लेख ''राष्ट्रवाद बनाम आतंकवाद'' में इस प्रवेश को, 'धमाकेदार' निरूपित किया था, उतना ही जितना शिकागो की धर्मसभा में, एक ही नामराशि नरेन्द्र (स्वामी विवेकानंद) का हुआ था। स्वामीजी के संबोधन-भाईयों और बहनों, से ही धर्मसभा कक्ष तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा था। इसी लेख में ही अन्यत्र, उल्लेख किया था कि मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने से 'विश्व राजनीति का ध्रुवीकरण होगा।'

अगस्त 2013 में प्रकाशित लेख '7221 की थाली और मोदी की थाली' में रेखांकित किया था-मुझे मोदी के रूप में 'पंकिल भारतीय राजनीति में धूमकेतु' उठा हुआ दिखाई दिया। इस लेख में और भी बहुत कुछ अनूठा था।

मोदी जी पहली बार सांसद बने थे। संसद भवन को सेवा का मंदिर मान कर प्रथम सीढ़ी पर माथा टेक दिया। प्रभु से सेवक बने रहने का आशीर्वाद माँगा। जीवन की तीन एषणाओं-पुत्रैषणा, वित्तैषणा व लोकैषणा का त्याग कर चुके थे। नवविवाहिता पत्नि से सहमतिपूर्वक विछोड़ से पुत्रैषणा स्वतः समाप्त हो गई। वित्तैषणा व लोकैषणा का त्याग, गुजरात के मुख्यमंत्री बनने पर कर दिया। मुख्यमंत्री से प्रधानमंत्री पद पर जाते हुए मुख्यमंत्री पद में प्राप्त वेतन-भत्ते की राशि कर्मचारियों की निधि हेतु दे दी।

जब प्रधानमंत्री पर सम्भाला तो अनुभव पर आधारित विश्वास और पक्का हो गया। राजनीति और प्रशासन तंत्र दोनों भ्रष्टतंत्र में आकण्ठ डूबे हुए थे। इस पद को, इस कर्मयोगी ने, ईश्वरीय आदेश-'परित्राणाय साधुनाम्, विनाशाय च दुष्कृताम्' समझकर ग्रहण किया। देश के सर्वोच्च सत्ता पद पर जो व्यक्ति निरासक्त जीवन जी रहा है, वह गीता निर्देशित जीवन ही तो जी रहा है।

वित्तैषणा में आकण्ठ डूबे हुए सभी वर्गों के लोगों को प्रथम चेतावनी दी कि खातों में, खातों से बाहर रखा हुआ धन (Unaccounted-Money) जिसे कालेधन का नाम दिया गया, 30 सितम्बर 2016 तक स्वेच्छा से जमा कराईये। 55 प्रतिशत अपने पास रखकर 45 प्रतिशत शासकीय कोष में जमा करा दीजिये। अन्य कोई वैधानिक कार्यवाही नहीं की जावेगी। आंशिक रूप में ही योजना सफल रही। घाघ भ्रष्टाचारियों की नींद कहाँ खुलने वाली थी ? चार्टर्ड अकाउण्टेण्ट्स व टैक्स एक्सपर्ट वकीलों ने आय बनाने के शॉर्टकट बताकर अपना सिक्का जमा रखा था। व्यापारी वर्ग उन पर पूरी तरह आश्रित होने के कारण पूरी तरह आश्वस्त था कि सब कुछ ठीक हो जाएगा।

ठीक कुछ नहीं हुआ।

8 नवम्बर 2016 को रात्रि 12 बजे से 500 व 1000 के नोटों का विमुद्रीकरण कर दिया। इसे सर्जिकल स्ट्राइक व आर्थिक इमरजेन्सी कहा गया। समस्त भ्रष्टतंत्र बौखला उठा, पगला गया। संसद में, सड़क पर भौंका जा रहा था और हाथी अपनी मस्त चाल चल रहा था।

सशक्त नेतृत्व और जन समर्थन की शक्ति ने करोड़ों की अघोषित संपत्ति को नदियों में बहा दिया, टुकड़े-टुकड़े कर बोरों में भरकर कूड़ेदान में फिकवा दिया। जरा कठोर दिल दिमाग के कालाबाजारियों ने ऐसा नहीं किया, उनके घरों और प्रतिष्ठानों में बराबर छापे पड़ रहे है। कालाधन फूट-फूट कर निकल रहा है। क्रम जारी है और जारी रहेगा। त्यक्तेन भुन्जीथा। मा गृधः का पाठ मोदी जी ने पढ़ा दिया। अरबपति, खाकपति, भिखारी हो गए।

मोदी जी ने अपने भाषणों में स्पष्ट कहा है कि ''विमुद्रीकरण करके उन्होंने किन शक्तियों से पंगा मोल लिया है, वह बखूबी जानते हैं। वे उनका वध करा सकते हैं। उनके सिर के बाल नोचे जाते हैं ; एक भाषण में उन्होंने कहा-मेरा क्या ? फकीर हूँ, झोला लेकर फिर निकल पड़ूँगा।

इस प्रसंग में महर्षि दयानंद याद आ गए। महर्षि ने एक दिन पूर्व के भाषण में ईसाई धर्म की सत्य परंतु कटु आलोचना की थी। दूसरे ही दिन के भाषण में महर्षि ने कहा-लोग कहते हैं, सत्य भाषण न करूँ, कलेक्टर नाराज हो जावेगा, गर्वनर पीड़ा देगा। आगे कहा-सत्य भाषण ही करूँगा। इस नश्वर शरीर का क्या ? कोई भी हरण कर ले।

गौड़ीय सम्प्रदाय के मठाधीश, काशी शास्त्रार्थ के शिरोमणि नायक स्वामी विशुद्धानंद सरस्वती ने महर्षि दयानंद के लिये कहा-वह तो अवधूत है अर्थात् पुत्रैषणा, वित्तैषणा और लोकैषणा से मुक्त संन्यासी। हमारा तो मठ है। लाखों की आमदनी है। राजे-महाराजे तक चरण स्पर्श करते हैं। हमारा उनका क्या मेल ? 'जन नायक अवधूत मोदी की जय हो।'

महर्षि दयानन्द का 193वां जन्मोत्सव

दयानन्द मठ दीनानगर के तत्वावधान में एस.एस.एम. स्कूल में 12 फरवरी 2017 को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मोत्सव पूज्य स्वामी सदानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर 10:00 से 11:30 बजे तक हवन यज्ञ होगा। 11:30 बजे ध्वजारोहण आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज जी एवं रजिस्ट्रार श्री अशोक परुथी जी के करकमलों द्वारा किया जाएगा। इस अवसर पर भजन संगीत सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी के होंगे। प्रेरक प्रवचन श्री सरदारी लाल जी वरिष्ठ उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का होगा। स्वामी सदानन्द सरस्वती जी सभी को अपना आशीर्वाद प्रदान करेंगे।

बलविन्द्र शास्त्री मन्त्री एस.एस.एम. स्कूल

गायत्री महायज्ञ का आयोजन

आर्य समाज जालन्धर छावनी वेद प्रचार के कार्यों में सदैव अग्रणी रहा है। इस कड़ी में आर्य समाज जालन्धर छावनी के तत्वावधान में स्त्री आर्य समाज प्रतिदिन माघ संक्रान्ति से सांयकाल 4 से 6 बजे तक गायत्री महायज्ञ प्रतिदिन कर रही हैं। इस यज्ञ में स्त्री आर्य समाज की माननीय सदस्याओं के अतिरिक्त अन्य धर्माभिलाषी महिलाएं प्रतिदिन बढ़-चढ़ कर भाग ले रही हैं। इस गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति का विशेष आयोजन रविवार 12 फरवरी को प्रातः 10:00 बजे प्रारम्भ होगा और पूर्णाहुति 11 बजे डाली जाएगी। इस यज्ञ में प्रतिदिन श्रीमती श्यामावती अग्रवाल, श्रीमती प्रेम महाजन, श्रीमती सुदेश महाजन, श्रीमती प्रोमिला तलवाड़, श्रीमती राज गुप्ता, श्रीमती श्रुति अग्रवाल, श्रीमती मोनिका, श्रीमती आशा, श्रीमती कान्ता अग्रवाल, श्रीमती रजनी, श्रीमती पूनम गुप्ता, श्रीमती सन्तोष जैन, श्रीमती सावित्री, श्रीमती कविता शर्मा, श्रीमती सुखवर्षा, श्रीमती जीवन आशा, श्रीमती गुणमाला, श्रीमती सीमा, श्रीमती मधुबाला, श्रीमती कविता, श्रीमती सुमन, श्रीमती प्रेम गुप्ता भाग ले रही हैं।

सुदेश महाजन स्त्री आर्य समाज जालन्धर छावनी

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.)

स्वामी दयानन्द सरस्वती

के तत्वावधान में

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मोत्सव पर लुधियाना में आर्य महासम्मेलन का आयोजन रविवार 19 फरवरी 2017

कार्यक्रम

शनिवार 18 फरवरी 2017

विशाल शोभायात्रा प्रात: 10:30 बजे

आर्य कॉलेज महिला विभाग समीप पुराना दयानन्द हस्पताल लुधियाना से आरम्भ होकर कैलाश सिनेमा चौक, उपकार नगर दशहरा ग्रांऊड से शिव मन्दिर होते हुए, वृन्दावन रोड़ से सत्संग रोड़ से होकर आर्य कॉलेज महिला विभाग में सम्पन्न होगी।

रविवार 19 फरवरी 2017

आर्य महासम्मेलन

स्थान: आर्य कॉलेज महिला विभाग, लुधियाना

गायत्री महायज्ञ:- प्रात: 9:00 बजे से 10:15 बजे तक

ज्योति प्रज्वलन:- प्रात: 10:15 बजे
श्रीमती शालू एवं श्री मनीष मदान
बी. के. स्टीलस, लुधियाना

ध्वजारोहण:- प्रात: 10:20 बजे

श्री सुदर्शन शर्मा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

योग प्रदर्शन:- प्रात: 10:30 बजे

भजन एवं प्रवचन:- प्रात: 11:00 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक

प्रवचन:- स्वामी सम्पूर्णानन्द जी एवं
आचार्य विश्वामित्र जी

धन्यवाद एवं शान्तिपाठ

ऋषि लंगर:- दोपहर बाद 1:15 बजे

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।